

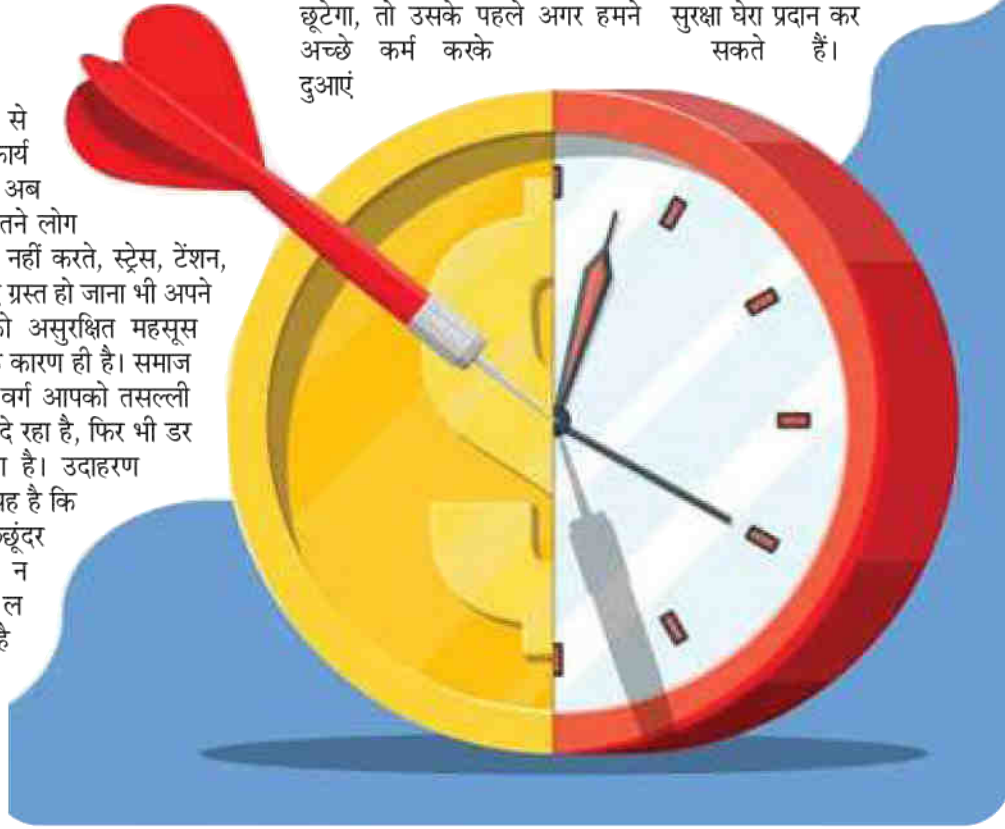
क्या आप अब भी नहीं जागेंगे... !!!



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

सुरक्षा के इतने इंतज़ाम, सबकुछ हमारे एक इशारे पर मुहैया हो जाता। सुरक्षा बल, धन बल, राजनीतिक बल, शारीरिक बल, जीवन बीमा आदि-आदि क्या नहीं हैं, फिर भी हम क्या अपने को पूरी तरह से सुरक्षित कह सकते हैं? डर पहले भी था लेकिन अब उसका रूप भयावह है। सभी जी नहीं रहे हैं, लड़-लड़ के जी रहे हैं। महामारी का प्रकोप, चारों तरफ सबकुछ जाने का भय हमको अनिद्रा का शिकार बना रहा है। समय की गति क्या इशारा दे रही है कि जब सबकुछ होते हुए कुछ भी काम न आये तो उस समय कौन सी ऐसी शक्ति है जो हमको सुरक्षा देगी। शायद इसका उत्तर हम सभी दे सकते हैं, क्योंकि हम स्थूल सुरक्षा को कभी भी मान्यता पूरी तरह से नहीं देते। हम तो उस सुरक्षा घेरे में ही चल रहे हैं।

प्राकृतिक आपदाओं या फिर दैहिक आपदा जो हमारे सुरक्षा घेरे को तोड़ती है, उस समय हमें सिर्फ और सिर्फ परमात्मा की याद आती है। लेकिन याद आने से या उसको पुकारने से हमारा कार्य होता तो अब तक कितने लोग सुसाइड नहीं करते, स्ट्रेस, टेंशन, अवसाद ग्रस्त हो जाना भी अपने आप को असुरक्षित महसूस करने के कारण ही है। समाज का हर वर्ग आपको तसल्ली देगा या दे रहा है, फिर भी डर लग रहा है। उदाहरण इसका यह है कि सांप छछूंदर को न उगल सकता है न उगल सकता है। हम सब



जमा नहीं की तो हमारा जीवन व्यर्थ चला जायेगा। परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं और समय की मांग यही है कि सिर्फ परमात्मा शिव निराकार ही हम सबको एक बहुत सुंदर सुरक्षा घेरा प्रदान कर सकते हैं।

क्योंकि जब आत्मा परमात्मा के साथ होती है तो वो निर्भय व सत्य होती है। अब यहाँ सत्य होने का अर्थ यह है कि आज डर या भय लगने का कारण सिर्फ यह है कि हम सभी बहुत झूठ बोलते हैं। चाहे अपने कारण से, चाहे अपने स्वार्थ के कारण से, चाहे कुछ प्राप्ति के कारण से, लेकिन झूठ पर झूठ बोले जा रहे हैं। उसके लिए जो हमें छोड़कर जाना है। भल पचास साल बाद, साठ साल बाद हमारे सम्बन्धी बदल जायेंगे, हमारे दायरे बदल जायेंगे, लेकिन फिर भी मरने के बाद दुःख तो होता है ना! उस दुःख से छुटकारा का आधार सत्यता, पवित्रता, ईमानदारी, सादगी, सच्चाई, सफाई आदि-आदि है। ये हमारे समय की मांग है। तो हे आत्माओं! शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करने के लिए झूठ बोलना कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है। देह नश्वर है, ये कुछ दिन में खत्म हो जायेगा, लेकिन आप उसके लिए इतना सारा पाप कर्म करते हैं जो आपको असुरक्षित ही बना रहा है। इसलिए आप सुरक्षित होने के लिए सच्चे, साफ और ईमानदार बनें और औरों को जगायें कि ये समय की मांग है और यही हमको करना है।

जागने का समय अब शुरु हो चुका है क्योंकि जब तक हम भय मुक्त नहीं, तब तक न हम रोग मुक्त होंगे और न हम अपने आप को सुरक्षित महसूस करेंगे।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दें



प्रश्न : मैं भोपाल से सच्चिदानंद चतुर्वेदी हूँ। वचन से हम धर्मराजपुरी के बारे में सुनते आ रहे हैं, जहाँ चित्रगुप्त जी हमारे कर्मों का वही-खाता लेकर हिसाब बताते हैं। तो फिर कर्म अनुसार हमें सज़ा दी जाती है। अगर ये सत्य नहीं है तो इनकी इतनी विस्तृत व्याख्या शास्त्रों में क्यों है? बिना किसी चीज़ के अस्तित्व के उसकी इतनी व्यापक व्याख्या कैसे है?

उत्तर : मृत्यु के बाद देह तो यहीं छूट जाता है। ये सोचने की बात है कि जलते हुए तेल में किसको डाला जाये! देह छूट गया तो आरा किसके सिर पर चलाया जाये! अब उसका वर्णन है तो कुछ रहस्य है। दूसरी एक मोटी सी बात जानने योग्य है कि आज संसार में कुछ ऐसी मान्यतायें हैं कि दो लाख से भी ज्यादा लोग जन्म लेते हैं। और अर्धलाख लाख मृत्यु को प्राप्त होते हैं। देखिये इतनों का हिसाब-किताब चित्रगुप्त अकेला रखे, अगर हम सचमुच में इसकी बहुत ही सूक्ष्मता पर नज़र डालें तो जो कर्म हम कर रहे हैं अन्दर, अगर हम कुछ बुरा सोच रहे हैं किसी के लिए तो वो सब कर्म हमारे ब्रेन में, हमारे ब्रेन में जो सेल्स हैं उनमें सूक्ष्म रूप से, तरंगों के रूप से प्रिंट होते रहते हैं। और जैसा कि हम जानते हैं, कैमेस्ट्री में तो इसकी बहुत ही चर्चा है। दो एलीमेंट मिलते हैं तो रिएक्शन होता है तीसरा एक कम्पाउंड बन जाता है। तो ये स्वतः ही फिर रिएक्ट होता है, रिएक्शन होता है। हमारी जो वेक्स(लहर) हैं उनमें से कुछ न कुछ निकलता रहता है। अब मान लो निगेटिव थॉट्स बहुत चले वो हमारे ब्रेन में प्रिंट हो गये। तो उससे निगेटिव एनर्जी निकलती रहेगी। वो कहीं न कहीं किसी न किसी चीज़ को डैमेज करेगी। वो हो गया उस कर्म का फल, उस संकल्प का फल। तो कर्म की सूक्ष्म वेक्स हमारे ब्रेन में प्रिंट होती हैं वो रिएक्ट करती हैं उसको ही फल कहा जाता है। कर्म और फल ये दोनों ऑटोमेटिक प्रोसेस हैं। यानी हमारे ब्रेन में ही उस कर्म का फल प्रिंट रहता है। तो जब मनुष्य की मृत्यु समीप होती है तो वो सब इमर्ज होने लगता है। ये एक विधिविधान है। और इमर्ज होने से उसकी सजायें वो फील होने लगती हैं। यमदूतों का भी उसे साक्षात्कार होने लगता है। तो उसे जो ये सजायें मिल रही हैं वो सूक्ष्म फीलिंग के रूप में होता है। और वो थोड़ा-सा समय मनुष्य को ऐसा आभास कराता है जैसे लम्बे समय तक सजायें

मिल रही हैं। यानी वो दस साल, बीस साल धर्मराजपुरी में पड़े हैं। कष्ट पा रहे हैं ऐसी फीलिंग होती है उनको। उस फीलिंग को ही चित्रकारों ने चित्रित कर दिया है।

मन की बातें

- राजयोगी डॉ. कु. सूर्य



प्रश्न : मेरा नाम प्रयाग शर्मा है। मैं जन्म से हूँ। कुछ ऐसी घटनायें सुनने में आती हैं कि किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई और कुछ समय के बाद वो जीवित हो गया। और उसने मृत्यु के बाद का अनुभव सुनाते हुए कहा कि दो काले-काले यमदूत उसके पास आये और उन्हें कहा कि तुम्हारा समय पूरा हुआ, अब चलो। और उसे खींचकर ले गए। वो बहुत रोया, गिड़गिड़ाया लेकिन उसकी एक नहीं सुनी गई। उसे जबरदस्ती ले जाया गया। तो ये क्या है?

उत्तर : ये बहुतों को होता है। अगर मनुष्य ने बहुत पाप कर्म किए हैं तो उसको ऐसे साक्षात्कार के द्वारा ऐसे फीलिंग कराई जाती है। यमदूत आपके सामने आ गए। वैसे साक्षात्कार एक अलग चीज़ है, आम व्यक्ति इस बात को शायद न समझ सके। ये ट्रांस की एक स्थिति है। मनुष्य को सब फील होता है कि मैं कहीं जा रहा हूँ जैसे इसकी हम तुलना कर सकते हैं स्वप्नों से। जैसे स्वप्नों में कितनी फीलिंग्स होती हैं। हम वहाँ जा रहे हैं, गाड़ी में जा रहे हैं, सांप दिख रहे हैं, शेर आ गया है न जाने कैसी-कैसी फीलिंग्स होती हैं। होता तो कुछ नहीं लेकिन मनुष्यों को कई मानसिक सजायें भी उसके द्वारा प्राप्त होती हैं। तो जैसे स्वप्न देखते हैं उससे कुछ ऊपर ट्रांस की स्थिति होती है उस तरह की फीलिंग्स होती हैं।

प्रश्न : मैं जब अपनी स्टडी स्टार्ट करती हूँ तो मैं डिस्ट्रेक्ट (विचलित) हो जाती हूँ। मैं यही सोचती हूँ कि कहीं से

शुरू करूँ और कहां से खत्म करूँ? ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : आपकी कंसंट्रेशन (एकाग्रता) इसलिए नहीं हो पाती क्योंकि आपके माइंड में डिस्ट्रैक्शन बहुत है। अगर आपका स्टडी पर्स (उद्देश्य) है, तो आप अपने माइंड को स्टडी से ही रिलेट करके रखिए और अगर आपका ध्यान इधर-उधर जाता है, आस-पास की बातों में जाता है तो आप उसे वहाँ से हटाइए, तभी आपकी कंसंट्रेशन पॉवर बढ़ेगी।

अभी आपका जो लक्ष्य है, वो आपको क्लीयर नहीं हो पा रहा है, जिसकी वजह से आप डाइवर्ट हो जाते हैं कि क्या करूँ? कैसे करूँ? आप अपने आप पर फोकस करें। आप सबसे पहले अपने लिए एक टारगेट (लक्ष्य) सेट कीजिये। आपको सारे दिन के लिए एक टारगेट लेना चाहिए। फिर उस आधार पर आप स्टडी कीजिये और फिर शाम को देखिए कि क्या वो टारगेट अचीव (प्राप्त) हुआ? आपको अपना एक चार्ट बनाना चाहिए। चाहे लौकिक पढ़ाई हो या अलौकिक पढ़ाई, दोनों का चार्ट बनाना चाहिए। तब आपकी कंसंट्रेशन अच्छी होगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की सुखी और सच्ची शान्ति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

